BIBLIOGRAPHY

(1) संगीत (Monthly publication from Sangit karyalaya, Hathras U. P.)

(2) लंगीत कला विहार (monthly publication by ABGM, Miraj)

(3) Raga vignan (Vol. 1 to 7) by late pt Vinayakrao Patwardhan (pune)

(4) Bhatkhande Sangeet Shastra (Vol 1 to 4) by late pt. Vishnunarayan Bhatkhande (Hathras UP)

(5) क्रमिक पुस्तकमालिका (Vol. 1 to 6) By late Pt. Vishnu narayan Bhatkhande (Hathras UP)

(6) नवराग निर्मित By Dr. Shankar TenKashe (ABGM Miraj)

(7) Abhinav Geetanjali - By Sh. Ramashraya Jha "Ram Rang" Volume 1 to 3, Sangeet Sadan Prakashan, Allahbad, UP.

(8) Essays in Musicology (TMS PUblication ,Baroda Editted by Prin. R. C. Mehta)

(9) Studies in Musicology - do -

(10) Laxshya Sangeet - Laxshya Sangeet Karyalaya Mumbai, Editted by S N Ratanjanker

(11) Abhinav Geet Manjari Vol. 1 to 3 By late Dr. S N. Ratanjanker, Acharya S. N. Rantanjankar foundation Mumbai.

(12) Raga Rang By Pt. Dinker Kaikini - do -

(13) The Indian Music Through Ages by Sh. S. Bandopadhaya, 1985, B. R. Publishing Corporation, New Delhi.

(14) The History of Indian Music - O. Goswami Asia Publishing House

(15) मुक्त संगीत संवाद Poona

(16) भावरंगह लहरी BY Ppt. Balvant Raj Bhatt, Varansi

(17) Journals of TMS, Editted by Prin. R. C. Mehta, Vadodara.

हिन्दुस्तानी संगीत में रागों का संमिश्रण

सोदाहरण चर्चा

- ऐतिहासिक, क्रियात्मक एवं सौन्दर्यबोधी परिप्रेक्ष्य में -

-- सुमति मुटाटकर

जहां 'राग' की संकल्पना भारतीय संगीत का प्राणतत्व है, वहां रागों का संमिश्रण भी हमारे रागदारी संगीत का अत्यन्त रोचक, महत्वपूर्ण और सृजनशील पहलू रहा है।

प्राचीन और मध्यकाल से लेकर आज के युगतक, हमारे शास्त्रग्रन्थों में और प्रचार में भी संमिश्रण की विविध विधाओं और आयामों के उल्लेख और विवरण मिलते हैं। विगत कालावधि की दीर्घता और संगीत में परिवर्तनों के कारण कुछ तथ्य और कुछ बातें भले ही आज हमारे लिये दुर्बोध हो गई हों, परन्तु मौलिक और सैद्धान्तिक दृष्टि से देखा जाए तो प्रचुर मात्रा में इन तथ्यों का दर्शन हमें आज के संगीत में होता है। इतना ही नहीं, वरन् कितनी ही बहुमोल सामग्री हमारे अवलोकन के लिये, चिन्तन के लिये मिलती है; नवनिर्माण की दिशायें दिखाई देती हैं। शास्त्र की परम्परा के ज्ञान से वर्तमान संगीत के प्रति आस्था व गौरव में निश्चित ही वृद्धि होती है।

संमिश्रण क्या है ?

- सम्यक्, यानि भलीभांति, योजनापूर्वक किया गया मिश्रण - एक से अधिक वस्तुओं को एकसाथ मिलाना।

संमिश्रण - मधुर, सुस्वादु, सुंदर, रंजक, चित्ताकर्षक होना चाहिए।

किसी बीज में किसी बीज को किसी तरह मिला दें तो वह सम्यक् मिश्रण नहीं होगा --

यस्य कस्य तरोर्मूलं -- यह सिद्धान्त है जो केवल संगीत को ही नहीं, वरन् पूरी सृष्टि को, निर्माण को, कलाओं को लागू है, यह सौन्दर्यबोधी तत्व है।

- संगीत-शास्त्र-ग्रन्थों में उल्लेख --

(१) शुद्ध, छायालग, संकीर्ण तीन प्रकारों में रागों का वर्गीकरण संस्कृत ग्रंथों में `औमायनम्` पहला ग्रन्थ है, जिसमें यह उल्लेख मिलता है। आगे चलकर और स्थानों पर -

फारसी ग्रन्थों में, रागदर्पण, तोहफ़तुलहिन्द, उसूलुल नग़माते आसफी में बहुत ही विस्तृत और रोचक विवरण है। शुद्ध छायालग - संकीर्ण को राग-रागिणी वर्गीकरण के साथ भी जोड़ा हुआ है।

(२) संगीतसमयसार में चित्र राग की कल्पना है, जिसका आधार - रंगबिरंगा रंगा हुआ वस्त्र जिस प्रकार सुंदर लगता है, उसी प्रकार से कोई धुन चित्र यानी रंग-बिरंगे संकीर्ण राग से युक्त होती है। रक्तिगुण की आवश्यकता इन सबमें अपेक्षित बताई है।

अज्ञान के कारण या अनवधान से अवांछित रीति से अन्य रागों की छाया किसी राग में आने लगे तो उसे महान् दोष माना जायेगा।

यह भी कहा है कि जहां निर्माण के, मिश्रण के नियम, सिद्धान्त होने चाहिए और होते भी हैं, वहां अन्ततोगत्वा रसिकों की स्वानुभूति को ही, उनके आनन्द को ही, प्रमाण मानना चाहिए।

(३) प्रबन्ध अध्याय में (संगीत-रत्नाकर) करण प्रबन्ध के अवसर पर चित्रित और मिश्रित दो प्रकार के मिश्रण की चर्चा तिलतण्डुलवत अवयवसांकर्य' चित्रितम् और दुग्धाम्बुवत् - मिश्रितम् - यह सिद्धान्त रागों के संमिश्रण में भी भली-भांति लागू हो जाते हैं।

(४) रस-सिद्धान्त के संदर्भ में नाट्यशास्त्र में `पानक` यानि `जलजीरा` जैसे स्वादिष्ट पेय की कल्पना के द्वारा रसपरिपाक की कल्पना समझाई है। अलग-अलग स्वादिष्ट तत्वों (हिंग जीरक मिर्च) के मिश्रण से बना हुआ पानक इन तत्वों से विलक्षण अपना स्वाद रखता है, इसी प्रकार से मिश्रित रागों के घटक रागों की अपेक्षा विलक्षण ऐसा उनका अपना विशिष्ट, सुन्दर स्वरूप बनता है। एक रासायनिक मिश्रण जैसा घुल-मिलकर एक हो जानेवाला यह मिश्रण बनता है।

----३

(५) संगीत-रत्नाकर, संगीतसमयसार, संगीतराज - जैसे प्रमुख शास्त्र-ग्रन्थों में 'स्थाय' के प्रकरण में जो स्पष्ट उल्लेख हैं, वे सब इस तथ्य पर प्रकाश डालते हैं कि रागों में संकर की, संश्लिष्ट की प्रक्रिया हमारे संगीत में कितनी सुप्रतिष्ठित हो चुकी थी। 'स्थाय' से तात्पर्य है राग का अवयवभूत स्वरसंनिवेश। रागों के संश्लिष्ट की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थाय का प्रकार है --

रागे अंश: - रागे रागान्तरस्य अवयव: ।

रंजकता और शोभा बढ़ाने के लिये संश्लिष्ट की क्रिया को मान्यता है। यह अंश सात प्रकार का बताया है -- कारणांश, कार्यांश, सजातीयांश, सदृशांश, विसदृशांश, मध्यस्थांश, अंशांश।

इस विस्तृत व महत्वपूर्ण शास्त्रीय तथ्य का विवरण केवल संक्षेप में ही प्रस्तुत किया है। रागों के संश्लिष्ट के कुछ पहलू व आयाम वर्तमान हिंदुस्तानी संगीत में प्रचुर मात्रा में परिलक्षित होते हैं। मेरी अपनी शिक्षा, अध्ययन व विद्वानों से प्राप्त जानकारी के आधार पर इनके कुछ प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करने जा रही हूं --

जैसे - (१) हमीर बिलावल (२) पटमंजरी, (३) बरवा, (४) गौडमल्लार,
(५) लक्ष्मी तोडी, (६) कान्हडे के प्रकार, (७) बहारें, (८) - - -
(९) - - - -

किसी एक व्यक्ति का ज्ञान और अनुभव तो सीमित ही हो सकता है। हिंदुस्तानी संगीत में विभिन्न घराने और परंपरायें हैं जिनके सुयोग्य प्रतिनिधि चोटी के कलाकार व विद्वान् हैं, उनके संग्रह में कितने ही बहुमोल, सुंदर रागरूप हैं, संश्लिष्ट हैं। इस सब सामग्री को मिलाकर हमारी संगीत संपदा की विशाल परिधि हो जाती है।

इस विद्वज्जन व कलाकारों की परिषद् के सामने नम्र निवेदन और अनुरोध करना चाहती हूं कि रागों के संश्लिष्ट के संबंध में संगीतशास्त्र में वर्णित नित्यनूतन व सृजनशील तथ्यों की ओर आस्थापूर्वक ध्यान दें और देखें कि ये आज के संदर्भ में कितने उपयुक्त और बहुमोल - सिद्ध हो सकते हैं।

'भारद्वाज'
१२१२८६